अर्थव्यवस्था का अर्थ,प्रकार और क्षेत्र :-

- अर्थव्यवस्था एक ऐसा तंत्र है जिसके अन्तर्गत विभिन्न आर्थिक क्रियाओं,संस्थागत क्रियाओं एवं उसके संबंधो का अध्ययन किया जाता है इन आर्थिक क्रियाओं के अन्तर्गत उत्पादन,उपभोग,विनिमय,वितरण,बचत,निवेश सम्मिलित है |
- अर्थव्यवस्था के पिता 'एडम स्मिथ'है | उनकी पुस्तक का नाम '**Wealth of the Nation**'है

अर्थव्यवस्था के प्रकार :

- **खुली अर्थव्यवस्था** :यह नियंत्रण मुक्त अर्थव्यवस्था है जो स्वतंत्र प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करता है |वैश्वीकरण की नीति में सभी देश मुक्त अर्थव्यवस्था को अपना रहे है |
- **बन्द अर्थव्यवस्था** :यह ऐसी अर्थव्यवस्था है जो विश्व के साथ किसी प्रकार के विदेशी व्यापार की क्रिया को सम्पन्न नही करता है | इस प्रकार की आर्थिक क्रियाएं एक देश की सीमा के अन्दर होती है
- **विकसित अर्थव्यवस्था** :इसप्रकार की अर्थव्यवस्था आर्थिक गतिविधियों एवं विकास के एक बेहतर स्तर का प्रतिनिधित्व करती है | इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में किसी सीमा/मापदंड का निर्धारण करना कठिन है | इस प्रकार की अर्थव्यवस्था के देशों में USA,जापान जैसे देश आते हैं,जिनके नागरिको की प्रतिव्यक्ति आय उच्च और बेहतर जीवन के आधार पर विकसित देश कहा जाता है |
- **विकासशील अर्थव्यवस्था** : इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में ऐसे देश आते है जो अपनी पिछड़ी अवस्था से उच्च विकास को ओर प्रयासरत है जैसे-भारत |
- **पूँजीवादी अर्थव्यवस्था** :इस प्रकार की अर्थव्यवस्था बाजार की शकितयो अर्थात् माँग और आपूर्ति के सिद्धान्तो के अन्तर्गत स्वतंत्र रूप से कार्य करती है | इसे 'बाजार अर्थव्यवस्था' के नाम से जाना जाता है |
- **समाजवादी अर्थव्यवस्था** : इस प्रकार की अर्थव्यवस्था कार्लमार्क्स के सिद्धान्तो पर आधारित व्यवस्था का प्रतिपादन करता है | जिसके अन्तर्गत उत्पादन के समस्त साधनों पर राज्य / समुदाय का नियत्रण रहता है जैसे-सोवियत रूस |
- **मिश्रित अर्थव्यवस्था** : इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में समाजवादी और पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का मिश्रण होता है | आर्थिक संसाधनों के महत्वपूर्ण भाग पर राज्य का नियंत्रण होता है और उसी के साथ निजी क्षेत्र को विकास का उपयुक्त अवसर प्राप्त होता रहता है | जैसे-भारत |
- मिश्रित अर्थव्यवस्था दो बिल्कुल विरोधी विचारधाराओं में समझौते का परिणाम है - इनमे से एक विचारधारा निर्बाध पूँजीवाद का समर्थन करती है और दूसरी इस बात में प्रबल विश्वास रखती है कि समग्र अर्थव्यवस्था के उत्पाद के साधनों का समाजीकरण होना चाहिए |
- मिश्रित अर्थव्यवस्था अपनाने वाला सर्वप्रथम देश 'फ्रांस' था
- मिश्रित अर्थव्यवस्थाएक अनिवार्य और नियोजित अर्थव्यवस्था है भारत,मिश्रित अर्थव्यवस्था का सर्वोत्तम उदाहरण है |
- 6 अप्रैल,1948 को राष्ट्रीय सरकार ने औद्योगिक नीति की घोषणा में मिश्रित अर्थव्यवस्था का सुझाव दिया था |

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र :

- केन्द्रीय सांख्यिकी सगंठन द्वारा अपनी राष्ट्रीय आय की पहली श्रृंखला में भारतीय अर्थव्यवस्था को 13 क्षेत्रों में विभाजित किया गया था पुरंत केन्द्रीय सांख्यिकी सगंठन ने अपनी द्वितीय श्रृंखला,जो 1966-67 में जारी की गयी थी ,में भारतीय अर्थव्यवस्था को तीन

क्षेत्रों-प्राथमिक,द्वितीयक व् तृतीयक क्षेत्रों में विभाजित किया |

- राष्ट्रीय आय के अनुमान के लिए अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों को 6 बडे तथा 14 उपक्षेत्रो में बाँटा गया |
- **प्राथमिक क्षेत्रक :** इस क्षेत्र में कृषि,वनक्षेत्र,मत्स्य क्षेत्र और खाने आदि प्राकृतिक संसाधन शामिल है | इनसे द्वितीयक क्षेत्रक के लिए कच्चा माल मिलता है
- **द्वितीयक क्षेत्रक :** इस क्षेत्र में प्राकृतिक उत्पादो को विनिर्माण प्रणाली के जरिए अन्य रूपो में परिवर्तित किया जाता है जैसे-गन्ने से चीनी और गुड का निर्माण |
- **तृतीयक क्षेत्रक :** इस क्षेत्र में परिवहन,शिक्षा,होटल,भण्डारण और सचार और सामुदायिक एवं व्यक्तिक सेवाएँ शामिल की जाती है | इसे 'सेवा क्षेत्रक' भी कहते है|

अन्य तीन बडे क्षेत्र निम्नलिखित है -

- **वित्त एवं स्थावर सम्पदा :** बैकिंग और बीमा,वास्तविक सम्पदा,भवनो का स्वामित्व तथा व्यावसायिक सेवायें |
- **सामुदायिक एवं निजी सेवायें :** सार्वजनिक प्रशासन एवं सुरक्षा,अन्य सेवायें |
- विदेशी क्षेत्र : विदेशी व्यापार
- आर्थिक संवृद्धिऔर आर्थिक विकास

आर्थिक संवृद्धि

- मात्रात्मक परिवर्तन से जुडा है |
- किसी देश की अर्थव्यवस्था में किसी समयावधि में होने वाली उत्पादन क्षमता और वास्तविक आय की वृद्धि आर्थिक संवृद्धि कहलाती है अर्थात् किसी अर्थव्यवस्था में सकल राष्ट्रीय उत्पाद,सकल उत्पाद एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि |

आर्थिक विकास :

- आर्थिक विकास एक व्यकितनिष्ठ अवधारणा है | जो गुणात्मक परिवर्तन से जुड़ा है अर्थात् इसके अन्तर्गत व्यक्ति के सभी पक्षो के विकास पर बल दिया जाता है |
- परम्परागत विचारधारा में आर्थिक विकास एक ऐसी स्थिति है जिसमें सकल राष्ट्रीय या घरेलू उत्पाद 5 से 7% प्रतिवर्ष की दर से बढ़ता रहे और उत्पाद एवं रोजगार सरंचना में इस प्रकार परिवर्तन हो की उसमें कृषि क़ा हिस्सा कम होते हुए विनिर्माण क्षेत्र तथा तृतीय क्षेत्र क़ा हिस्सा बढ़ता जाए |
- किन्तु आर्थिक विकास क़ा तात्पर्य नए दृष्टिकोण में भौतिक कल्याण में वृद्धि , गरीबी क़ा निवारण , असमानता और बेरोजगारी क़ा निवारण रखा गया जिसे पुनर्वितरण के साथ संवृद्धि क़ा नारा दिया गया |
- आर्थिक संवृद्धि के साथ आर्थिक विकास की संकल्पना अधिक व्यापक है | जहाँ आर्थिक संवृद्धि से तात्पर्य किसी देश में प्रति व्यक्ति उत्पादन से है वहाँ आर्थिक विकास से तात्पर्य प्रति व्यक्ति उत्पादन के अलावा सामाजिक और आर्थिक ढाँचे में परिवर्तन से है |
- अक्सर जनसंख्या के व्यवसायिक वितरण की दृष्टि से राष्ट्रों को विकसित और अल्पविकसित देशों की श्रेणी में रखा जाता है | प्राय: अल्पविकसित देशों में राष्ट्रीय आय क़ा बड़ा हिस्सा कृषि तथा अन्य प्राथमिक क्षेत्रों से उत्पादित होता है |
- भारतीय योजना आयोग के अनुसार अल्पविकसित देश वह है जिसमें एक और तो मानव शक्ति की क्षमता का बहुत कम उपयोग होता है वहीं दूसरी ओंर प्राकृतिक संसाधनों का भी पूरा प्रयोग नहीं हो पा रहा हो |
- विकसित देशों की तुलना में अल्पविकसित देशों में मानव पूँजी भी बहुत कम विकसित है | जहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में साक्षरता का स्तर 99% है | वहीं भारत में केवल 74% लोग साक्षर है |

आर्थिक विकास के कारक

- किसी भी देश के आर्थिक विकास में आर्थिक कारकों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है |
- हैराल्ड-डोमर मॉडल में पूँजी को आर्थिक संवृद्धि में निर्णायक भूमिका दी गई है | अर्थव्यवस्था चाहे जिस प्रकार की हो आर्थिक विकास की तेजी रखने के लिए पूँजी निर्माण की दर ऊँची रखनी चाहिए |
- अन्य कारकों में कृषि, विदेशी व्यापार, आर्थिक प्रणाली आदि है |
- आर्थिक विकास की प्रक्रिया में अनार्थिक , कारक भी महत्वपूर्ण है , जिसमें मानव संसाधन शिक्षा, भ्रष्टाचार से मुक्ति, विकास की आकांक्षा है |
- अल्पविकसित देशों में यदि गरीबी के दुष्चक्र से छुटकारा पाना है तो उसके लिए "प्रबल प्रयास" आवश्यक होगा | निवेश की मात्रा अधिक होनी चाहिए |

मानव विकास

- मानव विकस की अवधारणा सबसे पहले पाकिस्तान के अर्थशास्त्री 'महबूब-उल-हक' के द्वारा दी गई | संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अनुसार 1990 से प्रत्येक वर्ष मानव विकास रिर्पोट की जाती है जो जारी मानव विकास सूचकांक पर आधारित है |
- मानव विकास प्रतिमान के चार अनिवार्य घटक है |
- **औचित्य**-अवसरों तक पहुँच न्यायोचित होना चाहिए |
- **धारणीयता**- देश के भीतर और विभिन्न देशों के बीच जीवन स्तर सम्बन्धी विषमताओं पर ध्यान देना चाहिए |
- **उत्पादित**- यह विकास का एक घटक मात्र है ।
- **स्शक्तिकरण** - इसका अर्थ है कि लोग अपनी इच्छा से निर्णय ले सकें ।

- **मानव विकास सूचकांक:**

1990 मे संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने अपनी पहली HUMAN DEVELOPMENT REPORT मे मानव विकास सूचकांक की संकल्पना प्रस्तुत की । HDI मानव विकास का माप है । यह किसी भी देश की मानव विकास के संदर्भ में तीन मूलभूत आयामो/सूचकों के क्षेत्र मे उपलब्धियों की माप करता है ।

- HDI तीन सूचकों पर आधारित है-

1.प्रति व्यक्ति आय या एक अच्छा जीवन स्तर,जिसे क्रयशक्ति समाहित प्रतिव्यक्ति आय के जरिये मापा जाता है । (100-40,000 डॉलर)

2.जीवन प्रत्याशा या लंबा व स्वस्थ जीवन (जीवन प्रत्याशा :25-85 वर्ष)

3.शिक्षा विशेषकर महिला शिक्षा या ज्ञान की उपलब्धि (साक्षरता दर 0-100%)

प्रति व्यक्ति आय की गणना सभी देशो के लिए डॉलर मे की जाती है ।

HDR 2009 के अनुसार HDI के मूल्य के आधार पर देशो कर चार समूहों मे वर्गीकृत किया गया है ।

1.निम्न देश-0-0.0499

2.मध्य देश -0.500-0.799

3.उच्च देश- 0.800-0.899

4.बहुत उच्च देश-0.900 से ऊपर

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने वर्ष 2011की मानव विकास रिर्पोट की है । इस सूचकांक मे 187 देशों की सूची मे भारत का स्थान 134वां है ।कुछ महत्वपूर्ण देशों के स्थान-

नार्वे-1 आस्ट्रेलिया-2 श्रीलंका-97 चीन-101

भारत-134 कांगो-137 पाकिस्तान-145

Democratic Republic का HDI रैंक 187 है

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की मानव विकास रिपोर्ट के आधार पर भारत में भी मानव विकास रिपोर्ट जारी किया गया है |

भारत में राज्य स्तरीय मानव विकास रिपोर्ट जारी करने वाला पहला राज्य मध्यप्रदेश है | जिसने अपनी पहली मानव विकास रिपोर्ट 1995 में प्रस्तुत की |

HDR 2010 में तीन माप प्रस्तुत किए गए है-

असमानता समयोजित मानव विकास सूचकांक

लिंग असमानता सूचकांक

बहु आयामीय निर्धनता सूचकांक

लिंग सम्बंधित विकास सूचकांक

- HUMAN DEVELOPMENT REPORT-1995 में दो विश्वव्यापी लिंग सूचकांक शामिल किए गए | लिंग सशक्तिकरण माप

- लिंग-सम्बंधित विकास सूचक तथा मानवीय विकास सूचक औसत उपलब्धि में पुरूषों एवं स्त्रियों में असमानता को दर्शाता है | इसके लिए तीन आयामों का प्रयोग किया जाता है जो नीचे दिये गये है |
  1.स्त्रियों में जन्म पर जीवन-प्रत्याशा
  2.स्त्री बालिग साक्षरता एवं कुल नामांकन अनुपात
  3.स्त्री प्रति व्यक्ति आय
- HDR-2010 में नए माप को लिंग-असमानता सूचकांक अपनाया गया | इसमें महिलाओं के दृष्टिकोण से तीन महत्वपूर्ण आयाम है |
  1.प्रजनक स्वास्थ्य
  2.सशक्तिकरण
  3.श्रम बाजार में हिस्सेदारी
- इस सूचकांक का मन 0 से 1 के बीच ही हो सकता है |
- GII के शून्य होने का अर्थ है- महिलाओं और पुरूषों की स्थिति अत्यंत खराब है |
- GII रिपोर्ट में कुल 146 देशों को शामिल किया गया है,जिसमें भारत का स्थान 129वां है | स्वीडन का स्थान-प्रथम व नीदरलैंड का स्थान द्वितीय है |

बहुआयामी निर्धनता सूचकांक

- HUMAN DEVELOPMENT REPORT-1997 में पहली बार मानव निर्धनता सूचकांक को शामिल किया गया जो मानवीय जीवन के तीन अनिवार्य अंगों- आयु,ज्ञान और एक अच्छा जीवन स्तर में अपदस्त पर ध्यान केन्द्रीत करती है |
- HDR-2010 में HPI के स्थान पर एक नया माप बहुआयामी निर्धनता सूचकांक अपनाया गया है |
- MPI में HDI को प्रतिबंबितकरने वाले तीन आयाम लिए गए है-स्वास्थ्य,शिक्षा तथा जीवन स्तर |
- HDR-2010 में अनुमान लगाया गया है कि 104 देशों के 1/3 जनसंख्याके आधे से अधिक निर्धनता सहारा में है |
- भारत के आठ राज्यों में निर्धनता का स्तर 26 है जो सर्वाधिक निर्धन अफ्रीका देशों के बराबर है |